रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली की दुनिया

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

"मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरुष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सांझी शक्ति के द्वारा हिलाए न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में उड़ान असम्भव है।"

वर्ष–3 | अंक 35 | जनवरी 2010 | मूल्यः 5रू.

हमारा गणतंत्र दिवस

हमारा राष्ट्रीय त्योहार

गण का मतलब है लोग और तंत्र का मतलब है शासन यानि ऐसा शासन जो लोगों का, लोगों के लिए और लोगों द्वारा चलाया जाता है। जहाँ देश का मुखिया जनता द्वारा चुना जाता है। गणतंत्र दिवस, हमारा राष्ट्रीय त्योहार है जो हर साल 26 जनवरी को मनाया जाता है। यही एक ऐसा त्योहार है जिसे किसी जाति और धर्म विशेष के लोग ही नहीं बल्कि सभी भारतीय मिलजुल कर पूरे उत्साह के साथ मनाते हैं। यह त्योहार देश के हर स्कूल, कॉलेज, शैक्षणिक संस्थान, सरकारी कार्यालयों और सामाजिक संस्थाओं में मनाया जाता है। राष्ट्रीय त्योहार मनाने से लोगों में देश के प्रति देशभक्ति और प्रेम का भाव बढ़ता है, लोग जागरूक होते हैं, राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़ती है।

दिल्ली में गणतंत्र दिवस

26 जनवरी के दिन भारत की राजधानी, नई दिल्ली में राष्ट्रपति भवन से राजपथ पर गुजरते हुए इंडिया गेट तक और बाद में लाल किले तक शानदार परेड का आयोजन किया जाता है। सबसे पहले प्रधानमंत्री द्वारा इंडिया गेट पर अमर जवान ज्योति पर फूल चढ़ाते है। अमर जवान ज्योति उन सभी सैनिकों की याद में बनाया गया है जिन्होंने देश के लिए जीवन दे दिया। इसके बाद राष्ट्रपति को 21 तोपों की सलामी दी जाती है और राष्ट्रीय गान होता है। भारत के राष्ट्रपति, जो भारतीय सेना के तीनो अंग (थल, जल और वायु) के सर्वोच्च कमांडर है, विशाल परेड की सलामी लेते हैं। परेड में भारतीय सेना नए हथियारों और बल का प्रदर्शन करती हैं। इसके बाद राष्ट्रपति तीनों सेना के उन सैनिकों को बहादुरी के लिए पुरस्कार और मैडल देते हैं, जिन्होने अपने क्षेत्र में साहस दिखाया है। देश के ऐसे नागरिकों और बच्चों को भी पुरस्कार देते हैं जिन्होने विभिन्न परिस्थितियों में वीरता दिखाई है। इसके बाद राजपथ पर सेना के हेलिकॉप्टर दर्शकों पर गुलाब की पंखुडियाँ बरसाते हैं। इन हेलिकॉप्टरों पर तीनो सेनाओं के झंडे लगे होते हैं और सबसे आगे के हेलीकॉप्टर पर तिरंगा फहराता रहता है। परेड के बाद

रंगारग सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। इनमें देश के सभी राज्यो से आई झाँकियों में भारत की विभिन्न संस्कृति को दिखाया जाता है। सभी राज्य इस झाँकी के माध्यम से अपने अनोखे त्यौहारों, ऐतिहासिक स्थलों और कला दिखाते हैं।

यह आयोजन तीन दिन तक चलता है। सभी महत्वपूर्ण सरकारी भवनो में 26 जनवरी से 29 जनवरी के बीच रोशनी की जाती है।

गणतंत्र दिवस की शुरूआत

दिंसबर 1929 में लाहौर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें यह निर्णय लिया गया कि भारत को अंग्रेज सरकार से पूरी तरह से आजादी मिलनी चाहिए। 15 अगस्त 1947 को देश स्वतंत्र हुआ और 26 जनवरी, 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ। उसी दिन से गणतंत्र दिवस मनाया जाता है।

हमारा संविधान

संविधान हमारे देश के नियम व कानून की वह पुस्तक है जिसमें यह सभी लिखा है कि देश को कैसे चलाना, सरकार को कैसे काम करना है। इसमें हर नागरिक के लिए मौलिक अधिकार, नियम, और कानून भी दिए है ताकि किसी के साथ अन्याय हो तो उन्हें न्याय मिल सके। भारत का संविधान अब तक का दुनिया का सबसे बड़ा लिखित संविधान है। सभी नागरिकों को अपने अधिकारों का उपयोग करना चाहिए और कोई किसी का अधिकार छीनता है तो वह न्यायालय जा सकता हैं।

मौलिक अधिकार

भारतीय संविधान में 6 मौलिक अधिकार दिए गए हैं जो बिना किसी भेदभाव के सभी के लिए है। नागरिकों की भलाई और हर तरह के विकास के लिए मौलिक अधिकार महत्वपूर्ण हैं। अगर ये अधिकार हमें नही मिलते हैं तो न्यायालयों में जाकर इसकी माँग कर सकते हैं। मुख्य मौलिक अधिकार ये हैं :–

समानता के अधिकार का मतलब जाति, धर्म, लिंग, भाषा एवं राज्य के आधार पर सभी नागरिक समान हैं और किसी प्रकार का भेदभाव नहीं हो सकता है।

स्वतंत्रता का अधिकार का मतलब यह है कि भारत के हर नागरिक को अपनी बात कहने, भाषण देने और अपने तथा दूसरों के विचारों को जानने और दूसरों को बताने की पूरी स्वतंत्रता है। सरकारी नियमों के अनुसार सभा करने या जुलूस निकालने की स्वतंत्रता है। सभी को बिना किसी रोक टोक के भारत में कहीं भी आने जाने की स्वतंत्रता है। सभी को अपनी इच्छानुसार स्थायी या अस्थायी रूप से अपने देश में किसी भी जगह पर रहने की स्वतंत्रता का अधिकार है। सभी को कानूनी सीमा में रहकर अपनी इच्छा के अनुसार कोई भी काम तथा व्यापार करने की स्वतंत्रता है।

शोषण के विरूद्ध अधिकार के अनुसार किसी भी इंसान से जोर जबरदस्ती से काम नहीं लिया जा सकता है। कोई इंसान एक काम छोड़कर दूसरा काम करना चाहता है तो उसे रोका नहीं जा सकता। किसी का भी कोई शोषण नहीं कर सकता है।

धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार हर नागरिक को अपनी इच्छानुसार किसी भी धर्म को अपनाने व पालन करने तथा उसका प्रचार करने का अधिकार देता है। किसी भी इंसान को उसके धार्मिक रीति रिवाजों का पालन करने से रोका नहीं जा सकता है। सभी को अपने–अपने तरीके से पूजा–प्रार्थना करने की भी स्वतंत्रता है।

संस्कृति व शिक्षा का अधिकार– भारत के हर क्षेत्र में लोगों की अपनी–अपनी संस्कृति का पालन और भाषा को बोलने, लिखने और उसे आगे बढ़ाने का अधिकार है। संविधान इन सभी को अपनी संस्कृति और बोली को सुरक्षित रखने का अधिकार देता है।

देश के हर नागरिक को जितनी चाहे उतनी शिक्षा पाने की स्वतंत्रता है। धर्म या भाषा पर आधारित अल्पसंख्यक (ऐसा धर्म मानने वाले या भाषा बोलने वाले जिनकी संख्या कम है) समुदायों को भी अपनी शिक्षण संस्थाएँ खोलने का अधिकार है। सभी शिक्षण संस्थाओं को सरकारी सहायता बिना किसी भेदभाव के प्राप्त होती है।

संवैधानिक उपचार के अधिकार के अनुसार भारत का कोई भी नागरिक अपने किसी भी अधिकार के छिन जाने पर न्यायालय में जाकर न्याय की माँग कर सकता है। भारत का कोई भी राज्य अपना अलग संविधान नही बना सकता, केंन्द्र तथा राज्यों पर एक ही समान संविधान लागू होता है।

मूल कर्त्तव्य

संविधान में मूल कर्तव्यों को बाद में शामिल किया गया है जिससे नागरिकों में अधिकारों के साथ–साथ देश के प्रति

कर्तव्य की भावना का भी विकास हो सके। संविधान में भारत का सर्वोच्च पद राष्ट्रपति को दिया गया है और संविधान की रक्षा करने के लिए वह जिम्मेवार है। भारत के हर नागरिक को संविधान का पालन करना चाहिए। इसका मतलब देश की संस्थाओं, तिरंगा झंडा और राष्ट्रगान का आदर करना चाहिए। सभी को भारत की एकता और अखण्डता की रक्षा करनी चाहिए। देश की सेवा के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। सभी लोगों को आपस में समरसता और बंधुत्व की भावना को बढ़ाना चाहिए। सार्वजनिक संपत्ति जैसे स्कूल, पंचायत भवन, धर्मशाला, अस्पताल, बस/रेलवे स्टेशन आदि की सुरक्षा करना चाहिए।

प्रेम और एकता

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है जहाँ कई धर्मों और जातियों के लोग रहते हैं। जाति या धर्म के नाम पर किसी भी तरह का भेदभाव या छुआछूत नहीं करना चाहिए। केवल कानून बनाकर समाज में फैली बुराईयों को कम नहीं कर सकते। सभी में यह भावना होनी चाहिए कि सभी एक हैं और ईश्वर ने सभी को बनाने में कोई भेदभाव नहीं किया है। बहाउल्लाह ने कहा है, "ईश्वर एक हैं, सभी धर्म एक हैं और संपूर्ण मानवजाति एक हैं क्योंकि सभी को बनाने वाला एक ही ईश्वर है।" सभी धर्मों के लोगों को आपस में मिलजुल कर रहना चाहिए और एक दूसरें के त्योहारों में खुशी से भाग लेना चाहिए।

देश के प्रति वफादारी

हर भारतीय का कर्त्तव्य है कि वे अपने देश के प्रति वफादार रहें और ऐसा कोई भी काम ना करें जिससे समाज या देश को हानि पहुँचती है। उस हर काम से बचना चाहिए जो झूठ है या नुकसान पहुँचाने वाली होती है। बहाई लेखों के अनुसार "हर देश या सरकार में लोगों को अवश्य ही सरकार के प्रति वफादारी, विश्वास तथा सच्चाई से रहना चाहिए। यदि कोई अपनी सरकार के प्रति वफादार नहीं है तो अपने धर्म के प्रति भी वफादार नहीं हो सकता। सरकार के प्रति वफादारी एक आवश्यक आध्यात्मिक तथा सामाजिक नियम है।"......एक बेहतर सामाजिक व्यवस्था तथा आर्थिक व्यवस्था की स्थापना के लिए सरकार के नियमों तथा कानूनों के प्रति वफादारी बहुत जरूरी है।"

देश के प्रति सेवा की भावना

सभी का कर्त्तव्य है कि अपने देश की सेवा करें। जब किसी भी काम को प्रेम और त्याग की भावना से करते हैं तो वह सच्ची सेवा कहलाती है। जब सभी अपनी–अपनी जिम्मेदारियों को समझकर समय पर पूरा करेंगे तो हर काम आसानी से होंगे। दूसरों की मदद करके अपने देश के विकास में अपना योगदान दे सकते हैं।

पर्यावरण के प्रति जिम्मेवारी

सभी को अपने देश के पर्यावरण को साफ और शुद्ध रखना चाहिए। नदी, तालाबों में कूड़ा कचरा फेंककर गंदा नहीं करना चाहिए। कचरे को जलाना नहीं चाहिए। सब्जियों, फलों के छिलकों से खाद बनाना चाहिए। पेड़ नहीं काटना और ज्यादा से ज्यादा पेड़ पौधे लगाने चाहिए। यदि एक पेड़ काटना पड़े तो उसके बदले दो पेड़ लगाने चाहिए। प्लास्टिक की पन्नियों की जगह कागज या कपड़े की थैली का उपयोग करना चाहिए। पशु–पक्षियों की रक्षा करनी चाहिए। उनके प्रति दयाभाव रखना चाहिए। साफ–सफाई रखना देश के नागरिक होने के नाते सभी का नैतिक कर्त्तव्य बनता है कि अपने और अपने घर के साथ–साथ बाहर भी साफ–सफाई का ध्यान रखें। रास्तों पर आते–जाते इधर–उधर थूककर गंदगी नहीं फैलानी चाहिए। सड़कों पर कचरा नहीं फेंकना चाहिए।

अनुशासन का पालन करना

सभी को सरकार द्वारा बनाए नियम व कानून के अनुसार अनुशासन का पालन करना चाहिए। सड़कों पर गाड़ी चलाते समय यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए ताकि दुर्घटना नहीं हो। चौराहे पर लगी लाल, पीली और हरी बत्तियों के मतलब को समझ कर पालन करना चाहिए।

संस्थान के समाचार

सेन्ट पॉल स्कूल में मुख्य अतिथि

14 जनवरी को इंदौर के सेन्ट पॉल प्राथमिक विद्यालय में

माता–पिता, दादा–दादी, नाना–नानी का दिन मनाया गया।

इस अवसर पर संस्थान की निदेशिका डॉ.(श्रीमती) जनक मगिलिगन को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाया। उनके साथ संस्थान के प्रबंधक श्री जिम्मी मगिलिगन और स्टाफ के बच्चे भी थे। वहाँ स्कूल के बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। अपने उद्‌बोधन में श्रीमती मगिलिगन ने कहा "मुझे गर्व है कि मुझे इस कार्यक्रम में बुलाया गया। दादा–दादी, नाना–नानी का दिन बहुत महत्वपूर्ण है। बच्चों और उनके माता–पिता को अपने माता–पिता, दादा–दादी, नाना–नानी के साथ कुछ समय बिताना चाहिए ताकि उन्हें अच्छे संस्कार मिल सके और उन्हें भी लगे कि उन पर भी ध्यान दिया जा रहा है। आजकल माता–पिता लड़कों को घर के काम–काज की शिक्षा नहीं देते हैं। विदेश जाकर माता–पिता से फोन करके पूछते हैं कि चाय कैसे बनाते हैं? सभी धर्मों में लड़के और लड़कियों को बराबर शिक्षा देने के लिए कहा गया है। षॉल, ट्राफी व फूलों से उन्हें सम्मानित किया गया।

झण्डा ऊँचा रहे हमारा

23 जनवरी 2010 को इंदौर के रीगल चौराहे पर लोगों में देशप्रेम और राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे के प्रति सम्मान जगाने के लिए 7 दिवसीय 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा' अभियान की शानदार शुरूआत इंदौर के कलेक्टर श्री राकेश श्रीवास्तव व वरिष्ठ समाज सेवियों की उपस्थिति में हुई। इस कार्यक्रम में बरली संस्थान के प्रबंधक और निदेशिका ने भी भाग लिया।

रैली में शामिल संस्थान के प्रषिक्षणार्थी और स्टाफ

25 जनवरी को संस्थान के सभी प्रशिक्षणार्थी और स्टाफ रीगल चौराहे से गाँधी हॉल तक शहीदों की याद में आयोजित रैली में भी शामिल हुए। इस अभियान का समापन 29 जनवरी 2010 को किया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान की कार्यक्रम अधिकारी सुश्री विजयश्री व प्रशिक्षिका श्रीमती चंदा पिपरिया ने भाग लिया। कार्यक्रम में सभी धर्मो के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया था जिसका उद्देश्य यह बताना था कि सभी धर्म और मानवजाति एक हैं। इस अवसर पर स्वतंत्रता सेनानियों को भी विशेष सम्मान दिया गया जिन्होंने भारत को आजाद करवाने के लिए अपना योगदान दिया था। समारोह में तिरंगे झंडे को सम्मानपूर्वक नीचे उतारा गया और कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीय गान के साथ हुआ।

संस्थान में गणतंत्र दिवस

26 जनवरी 2010 को बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान में गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। धार जिले की श्रीमती सागरी डावर, भोपाल की श्रीमती चंदा पिपरिया, आलीराजपुर जिले की श्रीमती नंदा चौहान व कु. बरली डावर ने झंडा फहराया।

इस अवसर पर संस्थान की निदेशिका ने कहा "हम सभी इस साल गणतंत्र दिवस की 60वीं वर्षगांठ मना रहें हैं। संस्थान में अभी 82 प्रशिक्षणार्थी हैं जिनमें से 72 ऐसी हैं जो कभी भी स्कूल नहीं गईं हैं और अपने जीवन में पहली बार गणतंत्र दिवस में भाग ले रहीं हैं। गणतंत्र दिवस हमें उन शहीदों की याद दिलाता हैं जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना खून बहाया। देश के कई महापुरूषों जैसे रानी लक्ष्मीबाई, भगत सिंह, लाला लाजपतराय ने अपने जीवन का बलिदान दिया। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने शांति से अहिंसा का आंदोलन चलाया।"

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आशीष नर्सिंग होम के डॉ. कुलदीप विरानी ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए

कहा "आप सभी देश का भविष्य हैं और उस दीपक के समान हैं जो अपने गाँव और समाज के अंधेरे को दूर करेंगे। यह आप सब की जिम्मेदारी है। आप सभी में क्षमताएँ हैं। आपको उन क्षमताओं को अपने लगन व मेहनत से निखारना है तथा अपने जीवन और समाज को ऊँचा उठाना है।"

विशेष अतिथि हिमाचल प्रदेश के सनावर अंतर्राष्ट्रीय

पब्लिक स्कूल की कला व शिल्प की विभागाध्यक्षा श्रीमती सौभाग्य अत्री ने कहा "महिलाएँ शक्ति का स्वरूप हैं और इस बदलते युग में बहुत बड़ा योगदान दे सकती है। महिलाएं अपने आपको सक्षम बनाकर दूसरी महिलाओं को प्रेरित कर सकती है।" सांस्कृतिक कार्यक्रम में जिला खरगोन की कु. अनिता व साथी बहनें, जिला धार की श्रीमती कोमल व साथी बहनें, जिला देवास की कु. मालती व साथी

बहनें, जिला आलीराजपुर की कु. रेखा व साथी बहनें और महाराष्ट्र की कु. पारू व साथी बहनों ने भिलाली, निमाड़ी, मालवी और हिन्दी में देशभक्ति गीत गाएं। विशेष तौर पर आमंत्रित मशहूर कवियत्री श्रीमती सादिया अफरोज़ ने देशभक्ति गज़ल प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन प्रशिक्षिका श्रीमती तारू जाधव एवं आभार प्रदर्शन निदेशक मंडल की सदस्या डॉ. (श्रीमती) गीता हांडा ने किया।

आलीराजपुर जिले में सोलर कुकर लगाए गए

18 से 23 जनवरी के दौरान बरली संस्थान से श्री राजेन्द्र चौहान और श्रीमती नंदा चौहान ने आलीराजपुर जिले के उन्हाला और फड़तला गाँवों में 5 सोलर कुकर लगाए। ये सोलर कुकर उन महिलाओं के गाँवों में लगाए जिन्होंने संस्थान से प्रशिक्षण लिया था। उन्हें सोलर कुकर उपयोग करने का तरीका और सेट करना भी सिखाया गया।

परामर्ष बैठक

10 जनवरी 2010 को बरली संस्थान में परामर्ष बैठक में सभी स्टाफ ने संस्थान के इतिहास के बारे में पढ़ा और अपने अनुभव बाँटे। इसके साथ–साथ अनुषासन, सेवा और काम ही पूजा आदि विषयों का मिलकर अध्ययन किया। इस बैठक का मुख्य उद्देष्य संस्थान के द्वारा संचालित सभी कार्यक्रमों और गतिविधियों को और अच्छा करना था।

नेशनल ओपन स्कूल के परिणाम

हम आपको सूचित कर रहें हैं कि नवंबर 2009 में संस्थान में 97 वाँ प्रशिक्षण लेने वाली सामुदायिक स्वयंसेविकाओं द्वारा दी गई नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की कटाई और सिलाई की परीक्षा के परिणाम आ गए हैं और जो प्रशिक्षणार्थी पास हो गए हैं उनके परिणाम इस प्रकार हैं:–

नाम	अंक	नाम	अंक
कु. कन्या चौहान	150	कु. पूजा रावत	143
कु. मलकी भारत	130	कु. बनी डावर	134
कु. लावसा सोलंकी	134	कु. बिनु कुमारी	147
कु. मड्डी [illegible]	121	कु. सुलच्छा सोलंकी	137
कु. ज्योति कुमारी	143	कु. सुमन सोलंकी	138
कु. सीमा मोरे	144	कु. सुषमा सोलंकी	146
कु. बुगली माली	132	कु. रूना डावर	141
कु. गीता डावर	144	कु. इंदा रावत	136
कु. नजमा डावर	143	कु. बानु अलावा	136
कु. सुशीला रावत	138	कु. अनिता गहलोत	138
कु. मंजु चौहान	138	कु. अंजली अवास	143
कु. नीतू कुमारी	143	कु. सविता वास्कले	137
कु. ललीता जमरे	130	कु. इन्दी भवाड़िया	140
कु. पूना अवासे	143	कु. उर्मिला साहू	141
कु. मीरा मुझाल्दे	130	कु. मनीषा मुझाल्दे	135
कु. आरती परिहार	131	कु. अंजु साहू	140
कु. बंटी डावर	142		

देष / विदेष से संस्थान देखने आए

6 जनवरी 2010 को यूनिसेफ भोपाल के कार्यक्रम अधिकारी

श्री भाई शैली व उनकी पत्नी श्रीमती राठौर संस्थान देखने

आए। वे संस्थान में चलने वाली गतिविधियों को देखकर काफी प्रभावित हुए। श्री शैली ने षुभकामना देते हुए कहा "जीवन अच्छा है लेकिन इस तरह का जीवन बहुत ही सार्थक और अच्छा है। संस्थान मध्यप्रदेश और भारत के हजारों गाँवों को आत्मनिर्भर और पर्यावरण मित्र बनने की प्रेरणा दे।" श्रीमती राठौर ने कहा "मेरे पास कुछ कहने के लिए शब्द नहीं हैं। यह मेरे लिए बहुत ही अच्छा अनुभव है।"

8 जनवरी को महाराष्ट्र के महात्मा ज्योतिबा फूले कॉलेज ऑफ सोशल वर्क से आए 12 छात्र और 22 छात्राओं ने कहा "संस्था काफी अच्छी है। संस्था अच्छे प्रकल्प योजना और

महिला विकास के लिए दिन रात मेहनत कर रही है। सभी का योगदान अच्छा है।" "संस्थान का वातावरण बहुत अच्छा है। यहाँ पर महिलाएँ कई तरह के काम सीखती हैं जिससे उनके अपने जीवन और परिवार को फायदा होता है।"

14 जनवरी को इंदौर संभाग के पुलिस विभाग के आई.जी. श्री संजय राणा ने कहा "इन लोगों के जीवन का मिशन तथा

इनका जीवन सच में सार्थक है। मैं जनक और जिम्मी के समर्पण को सलाम करता हूँ।"

20 जनवरी को छत्तीसगढ़, दुर्ग के छत्रपति शिवाजी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नलॉजी से आए प्रो. आर.ए. मिश्रा ने कहा "संस्थान में सोलर पर खाना बनते देखा। संस्थान के काम अतिप्रशंसनीय है जो महिलाओं को आत्मनिर्भर और प्रशिक्षण से साक्षर बनने में सहायता कर रहा है। इस तरह के काम में समर्पित जोड़े का योगदान अति प्रशंसनीय है।"

22 जनवरी को प्रयास मंडल से आई 25 महिलाओं के समूह को निदेशिका ने कम्प्यूटर से चित्रों को दिखाकर संस्थान की गतिविधियों की जानकारी दी। शुभकामनाएँ देते हुए उन्होंने कहा "अच्छे संस्कार हमारी भारतीय संस्कृति की धरोहर है। आपकी संस्था दिन दूनी रात चौगनी तरक्की करें। हम सबकी तरफ से आपके इस सुन्दर प्रयास की बहुत–बहुत बधाई।"

24 जनवरी को एम. वाय. अस्पताल के मेडिकल सुपरिन्टेन्डेन्ट डॉ. सलिल भार्गव और डॉ. रूचि भार्गव ने कहा "आत्मा खुश हो गई। बहुत अच्छा लगा। यहाँ का सोलर सिस्टम व बागवानी देखकर मन व आत्मा प्रसन्न हो गई।"

25 जनवरी को कनाडा, जर्मनी और पेरू से स्कूल के बच्चे इंदौर के डेली कॉलेज के माध्यम से संस्थान देखने आए। वे सभी संस्थान में सौर ऊर्जा के अलग–अलग तरह से हो रहे उपयोग और साफ–सफाई देखकर बहुत खुश हुए। उनके साथ आए शिक्षक श्री डेविड ने कहा "मैं थोड़े दिन पहले ही ताजमहल देखकर आया हूँ लेकिन यह जगह ताजमहल से कहीं ज्यादा अच्छी है।" उन्होंने कहा बरली संस्थान आदिवासी महिलाओं को सशक्त कर रहा है जो सभी के लिए एक उदाहरण है और ऐसी ही संस्था उनके देश में भी होनी चाहिए।

26 जनवरी को इंदौर हाई कोर्ट के न्यायाधीश श्री एन.के. मोदी संस्थान में आए। उन्होंने कहा "यहां पर चल रहे सेवाकार्य से मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ।"

स्वयंसेवा के अनुभव

इंग्लैंड से आई शूका मोहम्मदी ने संस्थान में दो महीने तक स्वयं सेवा देकर जाती बार कहा "संस्थान में सेवा देना एक बहुत ही अच्छा अनुभव था। संस्थान और यहाँ पर रहने वाले परिवार के साथ मेरी यादें हमेशा के लिए जुड़ गई हैं। संस्थान में क्षमताओं का खजाना है और मैं यहाँ के सिद्धांतों से बहुत प्रभावित हूँ। मैं इन आदिवासी महिलाओं को हमेशा याद रखूँगी और मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि मैं इनके इतने करीब आई।"

छत्तीसगढ़ के समाचार

19 वाँ प्रषिक्षण सत्र षुरू

विस्तार केन्द्र छत्तीसगढ़ में 19 वाँ प्रषिक्षण सत्र ग्राम ठेलकाबोड़ में 16 जनवरी 2010 को षुरू किया गया जिसमें 18 प्रषिक्षणार्थियों ने प्रवेष लिया हैं।

कार्यक्रम में वहाँ की सरपंच श्रीमती प्रर्मिला सोरी ने कहा ”यह हमारे लिए बहुत खुषी की बात है कि हमारे गाँव में महिलाओं के विकास लिए जो काम कर रहे यह बहुत अच्छा है। इस प्रषिक्षण से महिलाएं आगे बढ़ेंगी। इस काम के लिए हम पूरा सहयोग देंगे। उन्होने किषोरी बालिका योजना में 40 किषोरी को युवा सषक्तिकरण कक्षा में भाग लेने के लिए सहमति दी। केन्द्र प्रभारी श्रीमती मन्ना षर्मा ने संस्थान का परिचय देते हुए कहा ”संस्थान का उद्देष्य ग्रामीण महिलाओं का सषक्तिकरण कर उन्हें सपूर्ण विकास की ओर ले जाना है। बरली संस्थान इंदौर में प्रषिक्षण के द्वारा महिलाओं का विकास किया जा रहा है।” प्रषिक्षिका श्रीमती ममता रावल ने कहा ”इस विस्तार केन्द्र में तीन महीने के प्रषिक्षण में मेरा अपना और मेरे समुदाय का विकास में सदगुण एकता से रहना सिखाते है तथा स्वास्थ्य में अपने परिवार और आसपास के लोगों को स्वस्थ रहने की जानकारी देते है। सिलाई–कटाई में नाप लेना, ड्राफ्ट बनाना, कपड़ा काटना और सिलना सिखाया जाता है।” श्री मोतीराम यादव ने कहा ”महिलाएँ केवल घर का काम करे और बच्चों को संभाले वह दिन गुजर चुका है। अभी पक्षी के दो पंखों के तरह महिला पुरूष को एक साझेदारी से काम करना है। इसलिए महिलाओं को प्रषिक्षण लेना जरूरी है।”

कार्यक्रम के अंत में सहः प्रषिक्षिका सुरेखा मरकाम ने आभार व्यक्त किया।

षर्मिला सोलंकी की सफल कहानी श

मैं कु. शर्मिला सोलंकी खरगोन के नया बिलवा गाँव की हूँ। जैसे ही मैंने 2007 में 12 वीं की परीक्षा दी वैसे ही मेरे जीजाजी भूरेसिंग नार्वे मुझे बरली संस्थान में ले आए। उन्होंने मेरा पूरा खर्चा दिया और उनके कारण मुझे इस संस्थान में बहुत कुछ सीखने का मौका मिला। जब मैं यहाँ पहली बार आई थी तो उस समय मुझे बरली संस्थान के बारे में कुछ भी जानकारी नही थी। मैं इस संस्थान को कभी भी नही भूल सकती हूँ। बरली संस्थान एक सूर्य की तरह है जो दुनिया में रौशनी देता है। यहाँ की सभी दीदीयाँ सूर्य की किरणों के समान सभी गाँव में फैल कर रौशनी फैलाती हैं। जब मै यहाँ आई थी तो मुझे यहाँ की महिलाओं का पहनावा, खाना–पीना, रहन–सहन अच्छा नहीं लगता था क्योंकि मुझे ऐसा लगता था कि मैं तो पढ़ी लिखी हूँ, इन निरक्षरों के साथ क्या सीख पाऊँगी लेकिन इन बहनों के पास भी पारस छुपा था। मैंने यहाँ पर कक्षा में सहयोगी के रूप में एक दूसरे से सीखना और सिखाना जारी रखा मुझे यहाँ पर सभी विषय बहुत ही अच्छे लगे। व्यक्तित्व विकास, स्वास्थ्य और साक्षरता जैसे विषयों की जानकारी सरल भाषा में मिली। मेरा आत्मविश्वास बढ़ा, आत्मनिर्भर होने का महत्व समझा व सभी से प्रेम करना सीखा। मैंने सिलाई भी सीखी। संस्थान में मुझे परिवार का माहौल मिला जिसमे हम एक दूसरे को दीदी के रूप में पुकारते थे। वो मुझे बहुत अच्छा लगा क्योंकि यह एक दूसरे के प्रति आदर को दिखाता है। 6 महीने का प्रशिक्षण पूरा होने के बाद मुझे गाँव जाना पड़ा क्योकि मेरे दो छोटे भाई बहन पढ़ रहे थे। मुझे दोनो की चिन्ता बहुत होती थी। क्योंकि मेरी माँ नही होने के कारण मुझे उनका ध्यान रखना पड़ता था क्योंकि यह मेरी जिम्मेदारी थी। मेरे बाबा हमको पढ़ा रहे थे और खुद खाना बनाना सभी काम स्वयं ही करते थे तो सभी गाँव में और मेरी बुआ मुझे पढ़ने नहीं देना चाहते थे वे बोलते थे कि लड़की को पढ़ा रहे है। घर का काम नही कराते लेकिन मेरे बाबा मुझे मेरी मामाजी की लड़की मेरी दीदी के यहाँ रखकर 12 वीं की परीक्षा दिला कर मुझे पढ़ा रहे थे। जब मुझे पता चला कि मैंने 12 वीं की परीक्षा 61 प्रतिशत से पास कर ली है तो मुझे बहुत खुशी हुई। मेरे काका जी भी मुझे पैसे दे देते थे। मुझे सभी का सहयोग और प्रेम मिला। ईश्वर की कृपा से मेरे सभी सपने पूरे हुए। जिन्होंने मेरे दुख मे साथ दिये उन सभी की यादें हर पल मुझे याद आती है।

मुझे बचपन से ही अच्छी–अच्छी पुस्तकें पढ़ना अच्छा लगता था। गाँव की लड़की होने के कारण स्कूल जाकर पढ़ने में मुझे बहुत सारी परेशानियाँ हुई लेकिन मेरा मन तो पढ़ाई करने में ही लगा था। गाँव में लड़कियाँ पढ़ती नहीं है। मेरे मन मे यह विचार आता है कि कोई भी लड़की पढ़ाई करने का मन में ठान लें तो पढ़ाई कर सकती है और उसे सभी की सहायता मिल सकती हैं। जैसे मुझे मेरे भांजे, भांजिया और भतीजे काका, दीदी, मामा, भाई सभी मेरी सहायता करते हैं। बरली की

दुनिया पढ़कर मेरे मन में विचार आया कि गाँव जाकर सभी को उसके बारे में समझाऊँ। मेरे काका जी की दो छोटी लडकियाँ अनुश्री और भाग्यश्री मुझे देखकर बोलती हैं "हमारी शर्मिला दीदी जैसे हम भी पढ़ाई करना चाहते हैं।" 'बाधाए कब बांध सकी है आगे बढ़ने वालों को विपदाएँ कब रोक सकी है पथ पर चलने वालों को' ये विचार आने पर मुझे ऐसा लगता है कि दूसरी लड़कियों को भी पढ़ना चाहिए जिससे समाज व गाँव को सुधारने और देश का विकास करने में सहायता मिल सके क्योंकि बच्चों की पहली शिक्षिका माँ होती है। इसलिए लड़कियों की पढ़ाई बहुत जरूरी है। अब मैं भी गाँव में सभी की सहायता करूँगी क्योंकि संस्थान में मैंने सामुदायिक स्वयंसेविका का प्रशिक्षण लिया और मैं सभी की सहायता करने के लिए हर तरह से तैयार हूँ। अब मैं सभी की सहायता करूँगी। मैं संस्थान में सहयोगी के रूप में पढ़ाती थी। संस्थान में निरक्षर बहनों को पढ़ाई करने में सहायता कर मुझे बहुत खुशी होती थी। मैं पढ़ाई कर शिक्षिका बनना चाहती हूँ। बचपन से शिक्षिका बनने का सपना था। अभी संविदा की परीक्षा दी है जिसको पास कर शिक्षक बन सकते हैं। कई तरह की परेशानियाँ आने पर भी पढ़ाई छोड़ने का विचार मेरे मन मे कभी भी नही आया। संस्थान से प्रशिक्षण लेने के बाद मेरा आत्मविश्वास बढ़ा है और मुझे पूरा विश्वास है कि मैं अपना लक्ष्य जरूर पूरा करूँगी।

भिलाली गीत

आपणो भारोत देष वारू छेरे।
इना देषों ने तीने रोंगों ने झोण्डू छेरे।
झोण्डा मा तीनु रोंग ओलोग–ओलोग छेरे।

इना झोण्डान रोंग ओलोग–ओलोग सोन्देष आपेरे।
आपणा वो देषो मा इना झोण्डा काजे लोहरावे।
आपणा वो देषो मा इना झोण्डा काजे सुब जागे लोहरावे।

इना झोण्डा कोदा सुबु मानसे हिलीमिलीन रोहे।
आपणा वो देषोने नेता काजे ओटकोल कोरे।
आजुने दाहड़े आखा देषोंमा सुब मानसे खुषी मा रोहे।

आपणा–आपणा प्रदेषों मां नाची गावीने खुषी मा रोहे।
आपणा देषोन नावे घोणा मोटला मानसे मोरियारे
आपणू सुबो काजे नेहरूजी ने नावे लेणोरे।

आपणू सुबो काजे गाँधीजी ने नावे लेणोरे।
आपणू सुबो काजे इन्दिरा गाँधीजी ने नावे लेणोरे।
आपणो भारोत देष वारू छेरे।

कु. अजमा व साथी बहनें जिला अलीराजपुर

निमाड़ी गीत

घुघरिया खेड़ी को राजन फोज मा गयो।
देष नको कारण राजन मारे गयो।
मारे गयो रे राजन मारे गयो।

राजन की माताजी कइवानी बोली
मारो दूध को पिलयलो बेटो फोज मा गयो।
देष नको कारण राजन मारे गयो।

राजन का पिताजी कइवाना बोलया।
मारो लाड़लड़ाइलो बेटो फोज मा गयो।
मारे गयो रे राजन मारे गयो।

राजन का भय्या जी कइवाना बोलया।
मारो साथी संगीलो भाई फोज मा गयो।
मारे गयो रे राजन मारे गयो।

राजन की बहना जी कइवानी बोली
मारो राखी को बंधीलो भाई फोज मा गयो।
देष नको कारण राजन मारे गयो।

राजन की पत्नी जी कइवानी बोली
मारो मांग को सिन्दुर पति मारे गयो।
देष नको कारण राजन मारे गयो।

कु. मदी और साथी बहनें जिला खरगोन

प्रिंटेड मैटर–बुक पोस्ट
पता

____

____

____

____

इस पत्रिका के प्रकाषन में सहयोगी
सुश्री विजयश्री, श्रीमती ढेडी व श्री जिम्मी मगिलिगन

हमें पत्र लिखें

"बरली की दुनिया" के पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप हमें नीचे लिखे पते पर पत्र लिखें कि आपको नियमित "बरली की दुनिया" मिल रही है या नहीं।

संपादक "बरली की दुनिया"
बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान
180 भमोरी, न्यू देवास रोड, इंदौर 452010 (म.प्र.)

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की ओर से बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, 180 भमोरी, न्यू देवास रोड़, इन्दौर – 452010 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित
मुद्रण स्थल : राजा ऑफसेट, 863/9,नेहरूनगर, इन्दौर द्वारा मुद्रित **संपादक : डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन**